पाठ - पद (मीराबाई)

व्याख्या

(1) हरि आप हरो जन री भीर।
द्रोपदी री लाज राखी , आप बढ़ायो चीर।
भगत कारण रूप नरहरि , धरयो आप सरीर।
बूढ़तो गजराज राख्यो , काटी कुञ्जर पीर।
दासी मीराँ लाल गिरधर , हरो म्हारी भीर।।

शब्दार्थ

हरि – श्री कृष्ण
जन – भक्त
भीर – दुख- दर्द
लाज – इज्जत
चीर – साड़ी , कपडा
नरहरि – नरसिंह अवतार
सरीर – शरीर
गजराज – हाथियों का राजा ऐरावत
कुञ्जर – हाथी
काटी – मारना
लाल गिरधर – श्री कृष्ण
म्हारी – हमारी

प्रसंग :- प्रस्तुत पाठ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से लिया गया है। इस पद की कवयित्री मीरा है। इसमें कवयित्री भगवान श्री कृष्ण के भक्त – प्रेम को दर्शा रही हैं और स्वयं की रक्षा की गुहार लगा रही है ।

व्याख्या :- *इस पद में कवयित्री मीरा भगवान श्री कृष्ण के भक्त – प्रेम का वर्णन करते हुए कहती हैं कि आप अपने भक्तों के सभी प्रकार के दुखों को हरने वाले हैं अर्थात दुखों का नाश करने वाले हैं। मीरा उदाहरण देते हुए कहती हैं कि जिस तरह आपने द्रोपदी की इज्जत को बचाया और साड़ी के कपड़े को बढ़ाते चले गए ,जिस तरह आपने अपने भक्त प्रह्लाद को बचाने के लिए नरसिंह का शरीर धारण कर लिया और जिस तरह आपने हाथियों के राजा भगवान इंद्र के वाहन ऐरावत हाथी को मगरमच्छ के चंगुल से बचाया था ,हे श्री कृष्ण! उसी तरह अपनी इस दासी अर्थात् भक्त के भी सारे दुःख हर लो अर्थात सभी दुखों का नाश कर दो।*

(2) स्याम म्हाने चाकर राखो जी,
गिरधारी लाला म्हाँने चाकर राखोजी।
चाकर रहस्यूँ बाग लगास्यूँ नित उठ दरसण पास्यूँ।
बिन्दरावन री कुंज गली में , गोविन्द लीला गास्यूँ।
चाकरी में दरसन पास्यूँ, सुमरन पास्यूँ खरची।
भाव भगती जागीरी पास्यूँ , तीनूं बाताँ सरसी।
मोर मुगट पीताम्बर सौहे , गल वैजन्ती माला।
बिन्दरावन में धेनु चरावे , मोहन मुरली वाला।
ऊँचा ऊँचा महल बनावँ बिच बिच राखूँ बारी।
साँवरिया रा दरसण पास्यूँ ,पहर कुसुम्बी साड़ी।
आधी रात प्रभु दरसण ,दीज्यो जमनाजी रे तीरा।
मीराँ रा प्रभु गिरधर नागर , हिवड़ो घणो अधीरा।

शब्दार्थ

स्याम – श्री कृष्ण
चाकर – नौकर
रहस्यूँ – रह कर
नित – हमेशा
दरसण – दर्शन
जागीरी – जागीर , साम्राज्य
कुंज – संकरी
पीताम्बर – पीले वस्त्र
धेनु – गाय
बारी – बगीचा
पहर – पहन कर
तीरा – किनारा
अधीरा – व्याकुल होना

प्रसंग :- प्रस्तुत पद हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से लिया गया है। इस पद की कवयित्री मीरा है। इस पद में कवयित्री मीरा श्री कृष्ण के प्रति अपने प्रेम का वर्णन कर रही है और श्री कृष्ण के दर्शन के लिए वह कितनी व्याकुल है यह दर्शा रही है।

व्याख्या :- *इस पद में कवयित्री मीरा श्री कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति भावना को उजागर करते हुए कहती हैं कि हे !श्री कृष्ण मुझे अपना नौकर बना कर रखो अर्थात मीरा किसी भी तरह श्री कृष्ण के नजदीक रहना चाहती है फिर चाहे नौकर बन कर ही क्यों न रहना पड़े। मीरा कहती हैं कि नौकर बनकर मैं बागीचा लगाऊंगी ताकि सुबह उठ कर रोज आपके दर्शन पा सकूँ। मीरा कहती हैं कि वृन्दावन की संकरी गलियों में मैं अपने स्वामी की लीलाओं का बखान करूँगी। मीरा का मानना है कि नौकर बनकर उन्हें तीन फायदे होंगे पहला – उन्हें हमेशा कृष्ण के दर्शन प्राप्त होंगे , दूसरा- उन्हें अपने प्रिय की याद नहीं सताएगी और तीसरा- उनकी भाव भक्ति का साम्राज्य बढ़ता ही जायेगा।*

मीरा श्री कृष्ण के रूप का बखान करते हुए कहती हैं कि उन्होंने पीले वस्त्र धारण किये हुए हैं ,सर पर मोर के पंखों का मुकुट विराजमान है और गले में वैजन्ती फूल की माला को धारण किया हुआ है। वृन्दावन में गाय चराते हुए जब वह मोहन मुरली बजाता है तो सबका मन मोह लेता है।

मीरा कहती है कि मैं बगीचों के बिच ही ऊँचे-ऊँचे महल बनाऊंगी और कुसुम्बी साड़ी पहन कर अपने प्रिय के दर्शन करूँगी अर्थात् श्री कृष्ण के दर्शन के लिए साज श्रृंगार करूँगी। मीरा कहती हैं कि हे मेरे प्रभु गिरधर स्वामी ! मेरा मन आपके दर्शन के लिए इतना बेचैन है कि वह सुबह का इन्तजार नहीं कर सकता। मीरा चाहती है की श्री कृष्ण आधी रात को ही जमुना नदी के किनारे उसे दर्शन दे दें।

प्रश्न – उत्तर

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

प्रश्न 1. पहले पद में मीरा ने हरि से अपनी पीड़ा हरने की विनती किस प्रकार की है?

उत्तर: पहले पद से पता चलता है कि कवयित्री मीरा अपने आराध्य श्रीकृष्ण की अनन्य भक्त हैं। वे अपनी पीड़ा निवारण के लिए श्रीकृष्ण को उनकी क्षमताओं का गुणगान कराते हुए स्मरण कराती हैं। वे श्रीकृष्ण को उसी तरह अपनी मदद करने की विनती करती हैं जैसे श्रीकृष्ण ने द्रौपदी की चीर बढ़ाकर उनकी मदद की थी; नरसिंह रूप धारण कर हिरण्यकश्यप को मारकर प्रह्लाद की मदद की थी और मगरमच्छ को मारकर डूबते गजराज को पीड़ा से मुक्ति दिलाई थी।

प्रश्न 2. दूसरे पद में मीराबाई श्याम की चाकरी क्यों करना चाहती हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: दूसरे पद में मीराबाई श्याम की चाकरी अर्थात् नौकरी इसलिए करना चाहती हैं, क्योंकि वे उनकी अनन्य भक्त हैं। तथा उनमें उनका एकनिष्ठ विश्वास है। वे अपनी प्रेम-भक्ति की अभिव्यक्ति करने के लिए उनके लिए बाग लगवाकर प्रतिदिन सवेरे उठकर उनके दर्शन करना चाहती हैं और वृंदावन की कुंज गलियों में घूम-घूमकर उनकी लीलाओं का गान करना चाहती हैं, जिससे उनके तीनों भाव-भक्ति, दर्शन तथा स्मरण की पूर्ति हो सके।

प्रश्न 3. मीराबाई ने श्रीकृष्ण के रूप-सौंदर्य का वर्णन कैसे किया है?

उत्तर: कवयित्री मीराबाई को अपने आराध्य श्रीकृष्ण का रूप-सौंदर्य अत्यंत प्रिय लगता है। वे इस रूप-सौंदर्य को निहारते रहना चाहती हैं। उनके आराध्य श्रीकृष्ण के माथे पर मोर के पंखों का मुकुट है। उनके गले में वैजयंती के फूलों की माला सुंदर लग रही है। उनके साँवले शरीर पर पीला वस्त्र सुशोभित हो रहा है। वे मधुर स्वर में मुरली बजाते हुए वृंदावन में गाएँ चरा रहे हैं।

प्रश्न 4. मीराबाई की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

उत्तर: मीरा बाई की भाषा शैली की विशेषता है कि इसमें राजस्थानी, ब्रज और गुजराती तीनों भाषाओं का मिश्रण पाया जाता है। इसके अतिरिक्त पंजाबी, खड़ी बोली और पूर्वी हिंदी का प्रयोग भी किया गया है। मीराबाई की भाषा में प्रवाहात्मकता का गुण सर्वत्र विद्यमान है। उनकी भाषा भाव अनुकूल एवं विषय अनुरूप शब्द योजना द्रष्टव्य है। इसके अतिरिक्त उनकी भाषा में अनेक अलंकारों का सफल व स्वाभाविक प्रयोग हुआ है।

प्रश्न 5. वे श्रीकृष्ण को पाने के लिए क्या-क्या कार्य करने को तैयार हैं?

उत्तर:

कवयित्री मीरा अपने कृष्ण को पाने के लिए-

- उनकी चाकरी करना चाहती हैं।
- उनके बार-बार दर्शन करना चाहती हैं। इसके लिए वे विशाल भवन में बाग लगाना चाहती हैं।
- वे वृंदावन की गलियों में घूम-घूमकर कृष्ण के गुणगान करना चाहती हैं।
- वे कुसुंबी साड़ी पहनकर अर्धरात्रि में यमुना किनारे श्रीकृष्ण से मिलना चाहती हैं।

(ख) निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

प्रश्न 1. हरि आप हरो जन री भीर। द्रोपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर।
भगत कारण रूप नरहरि, धयो आप सरीर ।

उत्तर:

भाव सौंदर्य – इन पंक्तियों में कवयित्री ने अपने आराध्य श्रीकृष्ण से अपनी पीड़ा दूर करने का अनुरोध किया है। ऐसा करते हुए उनकी परोपकार भावना उभरकर सामने आ जाती है। वे 'जन की भीर' हरने की पहले प्रार्थना करती हैं। इसके लिए वे द्रौपदी और भक्त प्रहलाद की उस मदद को दृष्टांत रूप में प्रस्तुत करती हैं ताकि कृष्ण इसे याद कर उनकी प्रार्थना अवश्य सुनें।

शिल्प सौंदर्य –

भाषा – मधुर ब्रजभाषा का प्रयोग है जिसमें गुजराती और राजस्थानी शब्दों का प्रयोग है।
रस – शांत एवं भक्ति की प्रधानता है।
छंद – पद छंद का प्रयोग।
अलंकार – हरि आप हरो जन री भीर।
अन्य – गेयता एवं लयात्मकता।

प्रश्न 2. बूढ़तो गजराज राख्यो, काटी कुण्जर पीर।
दासी मीराँ लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर।।

उत्तर:

भाव-सौंदर्य – इन काव्य-पंक्तियों में मीरा स्वयं को श्रीकृष्ण की दासी बताकर ऐरावत हाथी के बचाए जाने का दृष्टांत

देकर अपनी पीड़ा को दूर करने की प्रार्थना करती हैं।

शिल्प-सौंदर्य-

1. राजस्थानी, ब्रज और गुजराती मिश्रित भाषा का प्रयोग हुआ है।
2. 'काटी कुण्जर तथा 'गिरधर हरो म्हारी भीर' में 'र' वर्ण की आवृत्ति से अनुप्रास अलंकार है।
3. रस – दास्यभक्ति।
4. सरल, सहज व प्रवाहमयी भाषा है और शैली तुकांत है।

प्रश्न 3. चाकरी में दरसण पास्यूँ, सुमरण पास्यूँ खरची।
भाव भगती जागीरी पास्यूँ, तीनू बाताँ सरसी।

उत्तर:

भाव सौंदर्य- प्रस्तुत पंक्तियों में कवयित्री मीरा की अपने आराध्य के प्रति दास्य भक्ति प्रकट हुई है। वे अपने प्रभु के दर्शन एवं सामीप्य; पाने के साथ ही अपनी इच्छा पूरी करना चाहती हैं। वे अपनी चाकरी के माध्यम से दर्शन पाना चाहती है, सुमिरन के माध्यम से जेब खर्ची और भक्ति भावरूपी जागीर प्राप्त करना चाहती हैं।

शिल्प सौंदर्य –

भाषा – मधुर ब्रजभाषा का प्रयोग है जिसमें राजस्थानी शब्दों की बहुलता है।
अलंकार – भाव भगती' में अनुप्रास तथा 'सुमरण पास्यूँ खरची' और 'भाव भगती जागीरी' में रूपक अलंकार है।
रस – भक्ति एवं शांत रस की प्रगाढ़ता।
छंद – 'पद' छंद का प्रयोग।
अन्य – लयात्मकता एवं संगीतात्मकता।

भाषा अध्ययन

प्रश्न 1. उदाहरण के आधार पर पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रूप लिखिए

उत्तर:

प्रचलित रूप –

1. चीर - वस्त्र,
2. धरयो - धारण,
3. कुण्जर - हाथी,
4. बिन्दरावन - वृंदावन,
5. रहस्यूँ - रहूँ (रहना),
6. राखो - रखो,
7. बूढ़ता - डूबता,
8. लगास्यूँ - लगाया,
9. घणा - घना,
10. सरसी - रसीली, रसयुक्त, (आनंदकारी),
11. हिवड़ा - हृदय,
12. कुसुम्बी - केसरिया रंग की।

egyanarchive

परियोजना कार्य

प्रश्न 1. मीरा के पदों का संकलन करके उन पदों को चार्ट पर लिखकर भित्ति पत्रिका पर लगाइए।

उत्तर:

1. "मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई"

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।
जा के सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई॥

2. "पंछी बनूं उड़ू रे गगन मां"

पंछी बनूं उड़ू रे गगन मां,
पिया मिलन की आस, लागी मन मां॥

3. "राणा जी मैनै गोविंद मिल्या"

राणा जी मैनै गोविंद मिल्या,
गुरू मिल्या मन्न भावै॥

4. "बिरहा बिरहा आकुल राती"

बिरहा बिरहा आकुल राती,
नींद नहीं आवे प्रीतम प्यारी॥

5. "जोगिया रंग झिनी झिनी ओढ़ी"

जोगिया रंग झिनी झिनी ओढ़ी,
छिप गयो सांवरिया॥

प्रश्न 2. पहले हमारे यहाँ दस अवतार माने जाते थे। विष्णु के अवतार राम और कृष्ण प्रमुख हैं। अन्य अवतारों के बारे में जानकारी प्राप्त करके एक चार्ट बनाइए।

उत्तर:

भगवान विष्णु के दस अवतार निम्नलिखित हैं-

1. **मत्स्य अवतार (मछली रूप)**
   भगवान विष्णु ने एक विशाल मछली का रूप धारण कर **मनु को प्रलय से बचाया** और वेदों की रक्षा की।
2. **कूर्म अवतार (कछुए का रूप)**
   देव-दानवों द्वारा अमृत मंथन के समय, मंदराचल पर्वत को स्थिर रखने के लिए भगवान ने **कछुए का रूप** लिया।
3. **वराह अवतार (सूअर रूप)**
   भगवान ने एक विशाल **वराह (सूअर)** रूप लेकर धरती को हिरण्याक्ष से बचाया और उसे जल से बाहर निकाला।
4. **नरसिंह अवतार (अर्ध-मानव, अर्ध-सिंह रूप)**
   भक्त प्रह्लाद की रक्षा के लिए भगवान ने **नरसिंह रूप** (आधा सिंह, आधा मनुष्य) धारण कर **हिरण्यकशिपु का वध** किया।
5. **वामन अवतार (बौने ब्राह्मण का रूप)**
   भगवान ने **वामन रूप** में राजा बलि से तीन पग भूमि मांगी और त्रिभुवन नापकर उसका अभिमान तोड़ा।
6. **परशुराम अवतार**
   भगवान विष्णु ने **परशुराम रूप** में क्षत्रियों के अत्याचारों से पृथ्वी को मुक्त किया। उनके पास सदा **फरसा (कुल्हाड़ी)** रहता था।
7. **राम अवतार**
   यह अवतार *रामायण* का आधार है। भगवान विष्णु ने राजा दशरथ के पुत्र **राम के रूप** में जन्म लेकर **रावण का वध** किया।

edyanarchive

8. **कृष्ण अवतार**

   महाभारत और *भागवत* के नायक। **कृष्ण** ने कंस, शकुनि, दुर्योधन आदि का नाश किया और **गीता का उपदेश** दिया।

9. **बुद्ध अवतार**

   भगवान विष्णु ने **बुद्ध के रूप में जन्म** लेकर **अहिंसा, करुणा और धर्म के मर्म** का प्रचार किया।

10. **कल्कि अवतार** (आने वाला अवतार)

    यह अवतार *भविष्य में होगा*, जब कलियुग में अधर्म चरम पर होगा। **कल्कि घोड़े पर सवार होकर पापियों का नाश करेंगे।**

egyanarchive